गोडवाड के गौरव एवं मरुभूमि के रत्न

प.पू.आ.श्री विजयरत्नसेनसूरीश्वरजी म.का

संक्षिप्त परिचय

बाल्यकाल और संस्करण :- विक्रम संवत 2014, भादो सुदी 3, दिनांक 16-9-1958 का मंगल प्रभात उदित हुआ और धर्मप्रेमी छगनराजजी गेनमलजी चोपडा की धर्मपत्नी चंपाबाई ने एक तेजस्वी पुत्ररत्न को जन्म दिया । बालक का नाम रखा गया राजमल चोपड़ा । परंतु उसे **'राजु'** के नाम से ही पुकारा जाता था । उस समय किसे कल्पना होगी कि यह बालक, चोपड़ा कुलदीपक, बाली नगर की शान, गोड़वाड़ के गौरव और मरुधर रत्न के रुप में सर्वत्र ख्याति प्राप्त कर लेगा ।

और माता-पिता की छठी संतान के रुप में पैदा हुआ यह बालक अपने त्याग, तप एवं स्वाध्याय की साधना के द्वाता इतनी प्रसिद्धि पा लेगा, इसकी तो शायद ही किसी ने कल्पना नहीं की होगी ।

राजु का जन्म महाराष्ट्र में पाचोरा (जिला-जलगाँव) के पास आए छोटे से घोसला गाँव में हुआ था, परंतु उसका बचपन तो अपने पूर्वजों की जन्मभूमि बाली में ही व्यतीत हुआ था ।

तीव्र क्षयोपशम एवं जन्म-जन्मांतर की निर्मल साधना के फलस्वरुप राजु का बचपन अत्यंत ही सादगी व संस्कार भरे वातावरण में व्यतीत हुआ ।

अपने, विशिष्ट क्षयोपशम के कारण व्यावहारिक शिक्षण में राजु स्कूल में हमेशा पहली क्लास से प्रथम स्थान पर रहता था । हाईस्कूल में जितने सेक्शन होते थे, उन सब में राजु प्रथन स्थान रहता था ।

सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी : ई.सन् 1975 में राजकीय उच्च माध्यामिक विद्यालय बाली में लगभग 600 विद्यार्थीयों में राजु को **'सर्वश्रेष्ठ-विद्यार्थी'** का पारितोषिक प्राप्त हुआ था ।

राजु जब छठी व सातवीं कक्षा में पढ़ता था तब वह अपने कमजोर साथी मित्रों को पढ़ाता था । स्कूल व कॉलेज जीवन में उसने कभी टयूशन नहीं किया, फिर भी आश्चर्य था कि सभी विद्यार्थिओं में उसका **'सर्वश्रेष्ठ'** स्थाम रहता था ।

बचपन से ही उसे ये संस्कार मिले थे कि कच्चा पानी भी बिना छना हुआ हो तो नहीं पीना चाहिए । बाली हाईस्कूल में छठी से नौंवी कक्षा के अध्ययन दरम्यान राजु ने कभी स्कूल में पानी नहीं पीया था, क्योंकि जो टंकी द्वारा नल से पानी आता था, वह बिना छना होता था । यह थी दृढ़ता राजु में ।

विशाल सभा में वक्तव्य : ईस्वी सन् 1974 में राजु हायर सेकंड्री में पढ़ता था, उस समय प्रधानाध्यापक थे सुगनोमलजी कांजानी । उनकी प्रेरणा से राजु ने 26 जनवरी 1974 के दिन बाली की सभी स्कूलों के विद्यार्थी एवं अध्यापकों के बीच, लगभग 2000 लोगों की उपस्थिति में मंच पर से अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया था । इतनी बड़ी सभा में निर्भिकता पूर्ण भाषण देने से राजु का हौसला खूब बढ़ गया था ।

दृढ़ मनोबल : उस समय राजु की उम्र मात्र 10 वर्ष की थी, वह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में छठी कक्षा में पढ़ता था । धार्मिक पाठशाला व गुरु भगवंतों के सत्संग के कारण उसने इस छोटी वय में ही रात्रि भोजन का संपूर्ण त्याग किया था । स्कूल का समय 12 से 5.30 बजे तक का था । जुलाई से से अक्तूबर-नवम्बर तक तो विशेष समस्या नहीं रहती थी, परंतु दिसंबर-जनवरी में 5.45 से 6 बजे के बीच सूर्यास्त हो जाता था... परंतु उन दिनों में राजु अपनी प्रतिज्ञा का दृढ़ता से पालन करता था । 5.30 बजे की छुट्टी की घंटी बजते ही वह तेजी से भागकर अपने घर पहुँच जाता और बहुत ही जल्दी-जल्दी थोड़ा-बहुत खाकर मंजन कर अपना मुँह साफ कर लेता । एक दिन नेहरु-जयंती होनेसे स्कूल में सभा का आयोजन किया था । किसी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में सभा का आयोजन हो तो उस सभा में राजु को अवश्य बोलना पड़ता था । प्रायमरी स्कूल से ही सभा में बोल ने की हिंमत आ जाने से वह हाईस्कूल में भी नि:संकोच होकर सभा में अपने विचारों को अभिव्यक्त कर देता था ।

नेहरु जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित सभा के विसर्जन में काफी देर हो गई । उस समय राजु दौड़कर घर आया । घड़ी में देखा तो छह बज चुकी थी....और पश्चिम में सूर्य अस्ताचल की गोद में सो चुका था । घर आने पर संध्याकालीन भोजन तैयार था...परंतु उसने कुछ भी लेने से इन्कार कर दिया...वह भूखा ही सो गया, परन्तु उसने अपनी प्रतिज्ञा का दृढ़ता से पालन किया । हाईस्कूल में अध्ययन दरम्यान ऐसे एक नहीं, अनेक प्रसंग आए । खेल-

कूद, सभा व विदाई समारोह आदि के किसी भी प्रसंग में उसने अपनी प्रतिज्ञा का भंग नहीं किया ।

उस समय राजु ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ता था । पाली जिले के चार जोन (विभाग) में से बाली विभाग में आयोजित अंग्रेजी निबंध स्पर्धा में द्वितीय स्थान प्राप्त करने के कारण अब उसे जिलास्तर पर आयोजित निबंध स्पर्धा में भाग लेने के लिए बगड़ी जाना पड़ा । उस समय बाली हाईस्कूल के 20-25 विद्यार्थी भी अन्य-अन्य प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए बगड़ी आये हुए थे । उन विद्यार्थियों में दो विद्यार्थी जैन थे । एक मात्र राजु को छोड़ सभी कंदमूल का भक्षण करते थे । बगड़ी में चार दिन की स्थिरता थी । रसोईया हर सब्जी व दाल में लहसुन डाल देता था । एक मात्र राजु के लहसुन नहीं खाने की प्रतिज्ञा थी । उसने रसोइये को निवेदन किया । वह रसोइया राजु के लिए मसाले (वघार) बिना की फीकी दाल अलग से निकाल देता था । इस प्रकार सिर्फ फीकी दाल व रोटी खाकर भी उसने चार दिन पसार किए...परंतु अपनी प्रतिज्ञा का भंग नहीं किया । ईस्वी सन् 1974 में बाली में उपजिला स्तरीय वक्तृत्व-स्पर्धा में राजु ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया था ।

ईस्वी सन् 1975 में राजु जब एस. पी. यु. कॉलेज फालना में प्रथम वर्ष में पढ़ता था तब भगवान महावीर के 2500 वें निर्वाण कल्याणक के उपलक्ष्य में **निबंध स्पर्धा** का आयोजन किया गया था, इस स्पर्धा में भी राजु ने फालना-कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त किसा था ।

स्कूल के वेकेशन पिरीयड में राजु प्रतिदिन 5-5 सामायिक करता था । स्कूल लाईफ में वह वेकेशन के समय में अगले वर्ष का संपूर्ण कोर्स स्वत: पढ़ लेता था । क्लास टीचर को पढ़ाने पर कोई बात समझ में न आए तो वह अवश्य प्रश्न करता था ।

दीक्षा-मनोरथ :– संवत् 2030 की बात है । बाली में मुमुक्षु कमलाकु-मारी की भागवती दीक्षा का भव्य प्रसंग था । उस प्रसंग की राजु के दिल पर अमीट छाप पड़ी । उसके अन्तर्मन में दीक्षा की तीव्र अभिलाषा उत्पन्न हुई । उसके साथ ही साधु-समागम, सत्साहित्य-वाचन और अकाल मृत्यू की रोमां-चक दु:खद घटनाओं को देखकर राजु के दिल में इस असार संसार के प्रति विरक्ति का भाव पैदा हुआ ।

उसने अपनी दिल की बात **पू. मुनिश्री प्रद्योतनविजयी म.सा.** को

कही । उन्होंने इस संदर्भ में विशेष मार्गदर्शन के लिए अपने परम उपकारी अध्यात्मयोगी पूज्यपादगुरुदेव पंन्यास प्रवर **श्री भद्रकरविजयजी गणिवर्यश्री** के पास घाणेराव भेजा ।

एक दिन अवसर देखकर राजु बाली से घाणेराव पहुँच गया । पूज्यपाद अध्यात्मयोगी पंन्यासप्रवरश्री से उसका कोई परिचय नहीं था । वह उनके पास पहुँचा । विशाल तेजस्वी भाल, मस्तक पर ब्रह्मचर्य का पूर्व तेज, करुणापूर्ण नेत्रों से युक्त उनके विराट् बाह्य व्यक्तित्व से वह अत्यन्त ही प्रभावित हुआ । उसने गुरुदेवश्री के चरणों में वन्दना की और तत्पश्चात् **पू. मुनिश्री प्रद्योतनविजयजी म.** का पत्र उसने गुरुदेवश्री के हाथों में सौंप दिया ।

गुरुदेवश्री ने वह पत्र पढ़ा...परंतु वे गम्भीर रहे... एकदम मौन । तभी एक श्रावक भोजन का समय होने से भोजन का आग्रह करने लगा ।

उस श्रावक के घर भोजन करने के बाद ठीक दो बजे राजु पूज्यपादश्री के पास उपस्थित हुआ । पूज्यश्री ने उसका परिचय पूछा । **'दीक्षा की भावना क्यों हुई ? कैसे हुई ?'** इत्यादि बातें भी पूछी । उस समय राजु हायर सेकन्डरी (ग्यारहवीं कक्षा) में पढ़ता था । पूज्यपादश्री ने उसके धार्मिक व्यावहारादि अभ्यास के संदर्भ में कुछ प्रश्न किए । और वैराग्यपुष्टि के लिए संसार का वास्तविक स्वरुप भी समझाया ।

पूज्यपादश्री के शुभ-सान्निध्य का वह पहला अवसर था... किन्तु उन धन्य पलों में भी जिस आह्लाद आनंद की अनुभूति हुई थी, उसे वे आज भी भूल नहीं सकते है । पूज्यपादश्री के मुखारविंद से निकलते वे शब्द मानो साक्षात् स्नेह और वात्सल्य के झरणे रुप थे । **'संसार के इस विषम वातावरण में से अपने आपको कैसे बचाया जा सके'** इसके लिए पूज्यपादश्री ने बहुत ही सुन्दर मार्गदर्शन दिया । विरक्ति की ज्योति बुझ न जाय और वह अखंडित बनी रहे, उसके लिए अनिवार्य मार्गदर्शन भी पूज्यपादश्री ने बड़े प्रेम से प्रदान किया ।

विदाई के पूर्व पूज्यपादश्री ने कहा, **''तुम देलवाड़ा में आयोजित धार्मिक-शिबिर में जा रहे हो, देलवाड़ा तीर्थ में युगदिदेव आदिनाथ भगवान परमात्मा की भव्य प्रतिमा है । आदिनाथ भगवान के सामने पाँच वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालन का संकल्प करना ।''** राजु ने पूज्यपादश्री की आज्ञा शिरोधार्य की। पूज्यपादश्री ने वासक्षेप ड़ाला-मंगलिक सुनाया और उसने वहाँ से विदाई ली ।

पूज्यपादश्री के व्यक्तित्व में ऐसा ही कोई चुम्बकीय आकर्षण था... जीवन में एक बार ही उनके शुभ सानिध्य... उनके वचनामृत का पान करने-

वाला भी उन्हें जीवनभर भूल नहीं सकता था । घाणेराव से विदाई के बाद भी पूज्यपादश्री वचनामृत उसके दिल में मंडराते रहे और उसकी वैराग्य भावना धीरे-धीरे पुष्ट होने लगी ।

वह देलवाड़ा तीर्थ में **प.पू.मुनिश्री जितेन्द्रविजयजी म.** एवं **पू. मुनिश्री गुणरत्नविजयजी म.सा.**के सान्निध्य में आयोजित इस शिविर समाप्ति के बाद वह बाली आया । उसके मन में संसार-त्याग की भावना धीरे धीरे दृढ़ बनने लगी । मन दीक्षा के लिए लालायित था, परंतु मन में भय था कि घर में दीक्षा की बात कैसे की जाय ?

गुरु आशीर्वाद की शक्ति : धीरे धीरे समय बीतने लगा । मार्च 1975 का समय था कॉलेज की परीक्षाएँ प्रारंभ हो गई थीं । यद्यपि पहले साल बी.कॉम. में सिर्फ छ विषय थे, किंतु परीक्षा लंबी चल रही थी । परीक्षा के दिनों में राजु के पिताजी भी खानदेश से बाली आए हुए थे । राजु को यह भय सता रहा था कि कॉलेज की परीक्षा पूरी होते ही उसे खानदेश चलने के लिए आग्रह किया जाएगा । जब कि उसकी तनिक भी इच्छा नहीं थी कि मैं पूज्यपादश्री के सान्निध्य से कही दूर चला जाऊँ ।

एक दिन की बात है । उसकी आधी परीक्षाएँ हो चुकी थी । एक दिन पिताजी व माताजी आदि नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा के लिए गए हुए थे । योगानुयोग उस दिन परीक्षा नहीं थी । खूब सोच विचार कर सायकल लेकर किसी को पता न चले इस ढंग से बाली से लुणावा चला गया । भावपूर्वक पूज्यपादश्री के पावन चरणों में वन्दना की । उसके बाद अपने दिल की बात प्रस्तुत करते हुए उसने कहा **''साहेबजी ! मुझे क्या करना ? कुछ दिनों बाद परीक्षाएँ पूरी हो जाएगी और पिताजी खानदेश चलने के लिए आग्रह करेंगे, ऐसी स्थिति में मुझे क्या करना चाहिए ?''**

पूज्यपादश्री ने उसकी परीक्षा लेते हुए पूछा **''राजु ! तु दृढ़ है न ?''**

उसने कहा **''हाँ ! जी !''**

''दीक्षा लेने की पूरी भावना है न ?''

उसने कहा **''मेरी पूरी-पूरी भावना है, बस, आपका आशीर्वाद चाहिए !''**

उसकी दृढ़ भावना को देखकर पूज्यपादश्री ने कहा, **''जब तुम्हें खानदेश ले जाने की बात करे तब कह देना कि मैं गुरु म.के. पास रहकर धार्मिक अभ्यास करना चाहता हूँ । मेरी वहाँ आने की इच्छा नहीं हैं । दीक्षा**

आपकी अनुमति बिना नहीं लूँगा, लेकिन अब मुझे संसार में नहीं रहना है ।''

पूज्यपादश्री ने पुनः उसे संसार की असारता समझाई और मस्तक पर वासक्षेप ड़ालकर आशीर्वाद प्रदान किया और कहा **''देव-गुरु की कृपा से तुम्हारा यह कार्य आसानी से पूरा हो जाएगा ।''** पूज्यपादश्री का आशीर्वाद लेकर वह अपने घर लौट आया । धीरे धीरे परीक्षा के दिन पूरे हो गए ।

एक दिन वह घर के ऊपरी खंड में सामायिक लेकर बैठा हुआ था, तभी उसे आवाज देकर नीचे बुलाया गया ।

सामायिक पूर्ण कर जैसे ही वह नीचे आया उसे पिताजी ने पूछा, **''ऊपर क्या करता है ?''**

उसने कहा **''सामायिक में धार्मिक अभ्यास करता हूँ ।''**

''अब यह सब छोड़ दे, तुझे खानदेश चलना है । ''

उसने कहा, **''मेरी खानदेश आने की इच्छा नहीं है ।''**

''तो क्या करना है ?''

''मैं गुरु म. के पास रहकर अभ्यास करना चाहता हूँ ।''

''तुझे दीक्षा नहीं लेनी है ।''

''मेरी तो दीक्षा लेने की पूरी-पूरी भावना है ।''

उस समय अनेक तर्क-वितर्क हुए । उसने अपनी मति कल्पना के अमुसार सभी प्रश्नों के जवाब दिए । आखिर पूज्यपाद तारक गुरुदेवश्री के आशीर्वाद फल स्वरुप उसे पूज्यपादश्री के पास रहने की अनुमति मिल गई । उसके बाद वह अपने गुरुदेव के सान्निध्य में 1½ वर्ष रहा ।

मुमुक्षु जीवन

वि.सं. 2031 में बेडा (राज.) में तथा वि.सं. 2032 में लुणावा (राज.) चातुर्मास बिराजमान अध्यात्मयोगी **पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म.सा.** तथा **पू.आ. श्री कलापूर्णसूरीश्वरजी म.सा.** आदि के सान्निध्य में रहकर राजु ने संयम जीवन का प्रशिक्षण लिया । प्रथम उपधान, वर्धमान तप का पाया तथा 12 ओली के साथ चार प्रकरण, तीन भाष्य, छह कर्मग्रंथ, योगशास्त्र के चार प्रकाश, वीतराग-स्तोत्र, संस्कृत दो बुक का अभ्यास भी किया ।

छ'री पालक संघ, नवपद ओली, बीस दिवसीय नवकार जाप अनुष्ठान, सम्मेतशिखर आदि कल्याणक भूमियों की यात्रा आदि द्वारा रत्नत्रयी की सुंदर आराधना कर संयम जीवन का प्रशिक्षण लिया ।

दि. 7 जनवरी 1977 के शुभ दिन उनके पिताजी एवं पंडितजी हिम्मतलालजी के साथ राजु **पूज्य गुरुदेवीश्री** के वंदन हेतु लुणावा गया । सभी ने पूज्यपाद तारक गुरुदेव को वंदन किया । तत्पश्चात् गुरुदेवश्री ने राजु के पिताजी को कहा **''राजु तैयार हो गया है...अब इसे कब तक संसार में रखना है ?''** नि:स्वार्थ प्रेम और वात्सल्य की मूर्ति पूज्यापादश्री के मुख से निकले ये शब्द उन शब्दों ने राजु के पिताजी के हृदय पर जादुई असर कर डाला... वे तत्क्षण राजु को दीक्षा दिलाने के लिए तैयार हो गये । उन्होंने कहा **''आपकी आज्ञा मैं शिरोधार्य करता हूँ''** और उसी समय राजु को दीक्षा की **'जय'** बुला दी गई । कुछ देर बाद घर लौटे तब घर में अन्य किसी को भी यह कल्पना नहीं थी कि इतनी जल्दी राजु की दीक्षा का निर्णय हो जाएगा । चंद क्षणों में तो राजु की दीक्षा की बात पूरे नगर में फैल गई ।

बाली में भव्य दीक्षा महोत्सव: बाली शहर में से पुरुषों की दीक्षाएँ नहीवत् हुई हैं । वर्षो पूर्व **पू.आ. श्री अमृतसूरिजी म.** के पास दो भाइयों ने दीक्षा ली थी । जिनमें एक थे **पू. खांतिविजयजी म.** तथा दूसरे थे **पू. निरंजनविजयजी म.** (जिनका कालधर्म हो चुका है) । वर्षो बाद बाली में हो रही भागवती दीक्षा महोत्सव में निश्रा प्रदान के लिए पूज्यपाद गुरुदेवनश्री के प्रथम शिष्यरत्न वर्धमान तपोनिधि **पू.पं.श्री हर्षविजयजी म.सा., पू.पं. श्री प्रद्योतनविजयजी म.सा., पू. तपस्वी मुनि श्री चंद्राशुविजयजी म.सा. तथा पू. तपस्वी मुनि श्री जयंतभद्रविजयजी म.सा.** (चारों वर्धमान तप की 100 ओली के तपस्वी) आदि स्वागत सह बाली पधारे थें ।

मुमुक्ष के तौर पर राजु पूज्यपादश्री के पास आया था, तब पूज्यपादश्री ने उसकी अनेकबार परीक्षा की थी । वे कई बार कहते थे, मैं तो वृद्ध हो चुका हूँ, तुझे जो पंसद हो उसके तुम शिष्य बन सकते हो। पूज्यपादश्री की इस बात को सुनकर हर बार राजु का एक ही जवाब था, **'मैंने आपश्री के चरणों में अपना जीवन समर्पित किया है, अब आप जो आज्ञा फरमाएँगे, वह मुझे स्वीकार्य है ।'**

महा सुदी 13 के दिन वर्षीदान का भव्य वरघोड़ा निकला । उसी दिन रात्रि में नगरपालिका बाली एवं जैन संघ बाली की ओर से नागरिक अभिनंदन समारोह रखा गया । दूसरे दिन मंगल प्रभात में महा सुदी 13, संवत 2033, दि. 2-2-1977 के शुभ दिन मुहूर्त में परम पूज्य पंन्यास प्रवर **श्री हर्षविजयजी म.सा.** के वरद हस्तों से राजु की भागवती दीक्षाविधि संपन्न हुई । दीक्षा विधि

के बाद नामकरण विधि हुई और जब उसे परम पूज्य अध्यात्मयोगी पंन्यास-प्रवर **श्री भद्रंकरविजयजी** गणिवर्य के शिष्य के रुप में (मुनि रत्नसेनविजयजी) घोषित किया गया तब सभी के आश्चर्य का पार न रहा ।

पूज्यश्री का गुण वैभव :

संसार में व्यक्ति का मूल्यांकन धन के आधार पर होता हैं. जो व्यक्ति धन से समृद्ध हो, वह धनवान कहलाता है, जब कि जैन शासन में व्यक्ति का मूल्यांकन गुणों के आधार पर होता है । साधु का वैभव उसका ज्ञान और उसकी गुण संपदा ही है ।

मरुधररत्न, गोड़वाड के गौरव, प्रवचन-प्रभावक, बाली नगर की शान पूज्य आचार्य प्रवर **श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** का भी अपना एक विशिष्ट व्यक्तित्व है ।

1. नित्य तप के तपस्वी : जैन धर्म में दो प्रकार के तप बतलाए हैं- नित्य तप और नैमित्तिक तप ।

जो तप हमेशा किया जाता हैं, वह नित्य तप कहलाता है और जो तप पर्युषण, नवपद ओली आदि निमित्तों को पाकर किया जाता है, वह नित्य तप कहलाता है । साधु जीवन में नित्य तप की खूब महिमा है । पूज्यश्री अपने दीक्षा दिन से नित्य तप एकासने की आराधना तपश्चर्या कर रहे है । 43 वर्षों से पूज्यश्री इस तप की साधना कर रहे है । चाहे जितनी प्रवचन आदि की जवाबदारी हो, लंबे लंबे विहार हो फिर भी पूज्यश्री ने यह तप नहीं छोड़ा । इतने वर्षों में 3-4 बार बड़ी बीमारी (बुखार, ओपरेशन आदि) के अपवादों को छोड़कर वे नियमित एकासना करते है ।

2. ज्ञानपंचमी तप : दीक्षा के पहले से ही पूज्यश्री ज्ञानपंचमी की आराधना कर रहे है । 44 वर्षों से उनकी यह आराधना निरतंर जारी है । यद्यपि उपवास व बड़ी तपश्चर्या उनके लिए कठिन हैं, फिर भी वे 44 वर्षों से प्रति मास शुक्ल पंचमी का उपवास करते हैं । इसके सिवाय पूज्यश्रीने वर्धमान तप की 14 ओली, शंखेश्वर पार्श्वनाथ के तीन अट्ठम किए है । गृहस्थ जीवन में 1 उपधान तप की आराधना की थी ।

3. प्रवचन कुशल : दीक्षा जीवन के 14 मास बाद ही पूज्यश्री ने सर्व प्रथम प्रवचन फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी विक्रम संवत 2034 के शुभ दिन **पू. पं. श्री हर्षविजयजी म.** की निश्रामें नगीनदास पाटण में दिया था ।

अध्यात्मयोगी पूज्य गुरुदेव पंन्यास प्रवर **श्री भद्रंकर विजयजी म.सा.**पींड-वाडा में बिराजमान थे । पाटण में पूज्यश्री के शिष्य लकवाग्रस्त **पू.मु. श्री धर्मरत्नविजयजी म.** की सेवा के लिए पूज्यश्री ने पंन्यास हर्षविजयजी आदि चार ठाणा को पाटण भेजा । नगीनदास मंडप-पाटण में 5 साधु महात्मा थे, परंतु प्रवचन करनेवाला कोई नहीं था । फाल्गुन सुदी-14 (चौमासी चौदश) नजदीक आ रही थी। संघ के अग्रणियों ने पंन्यासजी म. को प्रवचन हेतु विनंती की । पूज्यश्री ने उन्हें संतोषकारक जवाब दिया ।

5-7 दिन पहले **पू. पं. हर्षविजयजी म.** ने **पू.मु. रत्नसेनविजयजी** को कहा, **'रतन ! इस चौदश को तुझे प्रवचन करना है ।'**

मुनिश्री ने कहा, **'मुझ में यह शक्ति कहाँ ?'**

पूज्य ने कहा, **'रतन ! तूं चिंता मत कर !पूज्य गुरुदेव ने मुझे कहा है 'प्रवचन के लिए जरुर पड़े तो रत्नसेन को बिठा देना ।' अतः प्रवचन तुझे ही करना है ।'**

मुनिश्रीने पूज्यश्री की आज्ञा शिरोधार्य की और चौमासी चौदश के दिन लगभग 400-500 लोगों की उपस्थिति में **'सम्यदर्शन शुद्धं'** श्लोक ऊपर डेढ़ घंटे तक पूज्य पंन्यासजी महाराज की निश्रा में पहला प्रवचन किया । जिसे सुनकर पूज्य पंन्यासजी म. भी खुश हो गए ।

उसके बाद महिने में पांच तिथि, नवपद ओली में पूज्य मुनिश्री के प्रवचन हुए ।

धीरे धीरे प्रवचनकला दूज के चांद की भांति खिलने लगी ।

वि.सं. 2038 में अपनी जन्म भूमि बाली में तपस्वी सम्राट **पू.आ. श्री राजतिलकसूरजी म.** की आज्ञा से उन्हीं की निश्रा में चातुर्मास प्रवचन प्रारंभ किए । जो आज तक निरंतर जारी है। पिछले कई वर्षों से पूज्यश्रीके वर्ष में लगभग 350 दिन निरन्तर दैनिक प्रवचन जारी रहते है । अपने प्रवचनों के माध्यम से उन्होंने अनेक को धर्मबोध दिया है ।

4. गुरु समर्पणभाव : पूज्यश्री के दिल में अपने उपकारी स्व. अध्या-त्मयोगी **पू. पं. श्री भद्रंकरविजयजी** गणिवर्य के प्रति अपूर्व समर्पणभाव हैं । चातुर्मास हेतु पूज्य गुरुदेवश्री अथवा गच्छाधिपति भगवंतों की ओर से जो भी आज्ञा हुई, उसे उन्होंने सहर्ष स्वीकारा है ।

गुरु समर्पण भाव तो साधु जीवन का प्राण है । इस समर्पण भाव ने ही

उन्हें इतना ऊँचा उठाया है । **'पूज्यों के आशीर्वाद में जो शक्ति हैं, वह अन्य किसी में नहीं है ।'** इस जिन वचन को लक्ष्य में रखकर वे अपना जीवन जी रहे है ।

5. सरल सुबोध लेखन शैली : दीक्षा के चार मास बाद जब नूतन **मुनिश्री रत्नसेनविजयजी म.** ने **पू. पं. श्री हर्षविजयजी म.** के साथ पाटण चातुर्मास हेतु बामणवाडजी से 5 मई 1977 के शुभ दिन शाम को विहार किया । तब विहार के पूर्व मुनिश्री ने अपने गुरुदेव अध्यात्मयोगी **पू. पं. श्री भद्रंकरविजयजी म.सा.** के पास हितशिक्षा की मांग की ।

पूज्यश्रीने श्रमण जीवन के समुचित पालन हेतु हितशिक्षा प्रदान की और साथ में कहा **'रत्नसेन ! पाटण जाने के बाद रोज एक चिंतन लिखना ।'** पाटण पहुँचने के बाद एक शुभ दिन अपने गुरुदेव का स्मरण कर नूतन मुनि ने चिंतन लिखना प्रारंभ किया । प्रारंभ में प्रशमरति आदि के श्लोकों के आधार पर चिंतन लिखा । फिर **'नमो अरिहंताणं'** पद पर थोड़ा चिंतन लिखा ।

पाटण चातुर्मास के बाद मुनिश्री अपने गुरुदेव के चरणों में पिंडवाडा पधारे । एक दिन उन्होंने मुनिश्री के चिंतन की डायरी पढ़ी, उसमें रही भूलों को सुधारा । फिर बोले **'अच्छा लिखता है ।'**

बस, पूज्य उपकारी गुरुदेवश्री के अंत:करण के आशीर्वाद का ही फल है कि वे आज तक 210 से अधिक पुस्तकों का आलेखन, पूज्य गुरुदेवश्री की अनेक पुस्तकों का भावानुवाद और कई ग्रंथो का संपादन कर सके हैं । उनकी लेखनी अत्यंत ही सरल, सुबोध और धारा प्रवाह है, जो पाठकों के दिल को छू लेती है । आज भारत के कोने-कोने में पूज्यश्री का हिन्दी साहित्य बड़े चाव से पढ़ा जा रहा है ।

6. स्वाध्याय प्रेम : दीक्षा जीवन में भी वे अपना अधिकांश समय स्वाध्याय में व्यतीत करते है । उन्होंने अपने श्रमण जीवन में अनेक प्रकरण ग्रंथों को कंठस्थ करने के साथ संस्कृत-प्राकृत भाषा में लाखों श्लोक प्रमाण आगम साहित्य, कर्म साहित्य, प्रकरण साहित्य, आध्यात्मिक साहित्य, ज्योतिष, व्याकरण, न्याय आदि का सुंदर अभ्यास किया है । अजैन विद्वानों के भी जनोपयोगी हितकारी साहित्य का पठन किया है ।

7. समय प्रतिबद्धता : पूज्यश्री अपने हर कार्य में सदैव नियमित रहते है । किसी भी कार्य के लिए जो समय निश्चित किया हो, वे समय के पूर्व ही तैयार हो जाते है ।

8. मिलनसार वृत्ति : विहार आदि दरम्यान साधु जीवन में स्व-पर समुदाय, भिन्न भिन्न गच्छ आदि के महात्माओं का मिलन होता रहता है । पूज्यश्री सभी के साथ पूर्ण औचित्य का पालन करते है । इस प्रकार मिलनसार प्रकृति के कारण वे सर्वत्र आदरणीय बने है ।

9. गुण ग्राहकता : अन्य किसी के जीवन में रहे गुणों की वे अवश्य अनुमोदना करते है । गुणवान व्यक्ति को देख उनके गुणों के प्रति पूर्ण आदर भाव व्यक्त करते है । निंदा-ईर्ष्या, निरर्थक चर्चा आदि से वे सदैव दूर रहते है । ऐसे अनेकानेक गुणों को पूज्यश्री ने अपने जीवन में आत्मसात् किया है ।

10. पदोन्नति: शासन प्रभावक गच्छाधिपति **पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय महोदयसूरीश्वरजी म.सा.**की आज्ञानुसार दीर्घसंयमी **पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयकुंजरसूरीश्वरजी म.सा.**की शुभ निश्रा में चिचंवडगांव पूना में दि. 7-5-1999 के शुभ दिन **पू.मु.श्री रत्नसेनविजयजी म.**को **'गणी'** पर से विभूषित किया गया ।

परम श्रद्धेय **पू. गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् विजय हेमभूषणसूरीश्वरजी म.सा.**की आज्ञा से उन्ही की शुभ निश्रा में श्रीपालनगर मुबंई में दि. 2-12-2004 के शुभ दिन उन्हे पंन्यास पदवी से अलंकृत किया गया ।

समुदाय के ज्येष्ठ पूज्यों के निर्णयानुसार एवं नि:स्पृह शिरोमणि विद्ववर्य **पू. पंन्यासप्रवर श्री वज्रसेनविजयजी गणिवर्य श्री** की आज्ञा एवं आशीर्वाद से कोंकण शत्रुंजय थाणा तीर्थ में पोष वद-1, वि.सं. 2067, दि. 20-1-2011, गुरुवार शुभ दिन गुरु पुष्यामृतसिद्धियोग में आठ दिन के ऐतिहासिक महामहोत्सव के साथ शासन प्रभावक **पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय कनकशेखरसूरीश्वरजी म.सा.**के वरद् हस्तों से **प. पू. मरुधररत्न** गोडवाड के गौरव **पूज्य पंन्यास प्रवर श्री रत्नसेनविजयजी म.सा.** को गुरु गौतम नगरी (शिवाजी मैदान) में हजारों की जनमेदनी के बीच आचार्यपद पर प्रतिष्ठित किया गया, तब से वे **पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** के नाम से जाने पहिचाने लगे ।

आचार्य पदारुढ़ होने के बाद पूज्यश्री के वरद हस्तों से जैन-शासन की सुंदर आराधना-प्रभावनाएँ हो रही है ।